

## खण्ड—1 भारतीय समाज की समझ

### इकाई—1

#### प्राचीन सभ्यता के रूप में भारत

रूपरेखा				
1.1				परिचय
1.2				उद्देश्य
1.3				भारत प्राचीन सभ्यता के रूप में
	1.3.1			परिचय
	1.3.2			पूर्व पाषाण काल
	1.3.3			मध्य पाषाण काल
	1.3.4			उत्तर पाषाण काल
	1.3.5			सिंधू घाटी की सभ्यता
		1.3.5.1		सिंधू घाटी सभ्यता की विशेषताएँ
		1.3.5.2		सिंधू घाटी सभ्यता के आधार
			1.3.5.2.1	सामाजिक जीवन
			1.3.5.2.2	आर्थिक जीवन
			1.3.5.2.3	धार्मिक जीवन
			1.3.5.2.4	राजनीतिक जीवन
1.4				प्राचीन भारतीय शिक्षा —परिचय
	1.4.1			प्राचीन भारतीय शिक्षा के केन्द्र
		1.4.1.1		बौद्ध शिक्षा के केन्द्र
			1.4.1.1.1	नालन्दा विश्वविद्यालय
			1.4.1.1.2	बलभी विश्वविद्यालय

			1.4.1.1.3	विक्रमशिला विश्वविद्यालय
			1.4.1.1.4	श्रावस्ती नगर का शिक्षा केन्द्र
			1.4.1.1.5	अन्यान्य बौद्ध शिक्षा केन्द्र
		1.4.1.2		हिन्दू शिक्षा के केन्द्र
			1.4.1.2.1	तक्षशिला विश्वविद्यालय
			1.4.1.2.2	काशी
			1.4.1.2.3	रामायण महाभारत में वर्णित शिक्षा के केन्द्र
			1.4.1.2.4	धारा
			1.4.1.2.5	कन्नौज
			1.4.1.2.6	अनहिलपाटन
			1.4.1.2.7	कश्मीर
			1.4.1.2.8	काँची
1.5				सारांश
1.6				अपनी प्रगति की जांच करें।
1.7				संदर्भ

## 1.1 परिचय

मनुष्य संस्कृति के उषाकाल से ही इतिहास में रूचि रखता आया है जब से मनुष्य ने आखेटक जीवन को छोड़कर अपनी स्थिति को सुधारने का प्रयास किया है। तभी से मानव जीवन का इतिहास प्रारंभ हुआ। प्रारम्भ से भारत के इतिहास में अनेक उतार चढ़ाव आये, उन्नति— अवनति हुई। इतिहास एक साथ मनुष्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य का दर्शन कराता है। मनुष्य उसके माध्यम से अतीत के आलोक में वर्तमान को समझने एवं भविष्य की दिशाओं को जानने की चेष्टा करता है। इतिहास मानव जीवन के समस्त क्रियाकलापों का वृत्तान्त प्रस्तुत करता है। भारत के इतिहास को तीन विकास की अवस्थाओं में बाँटा गया है।

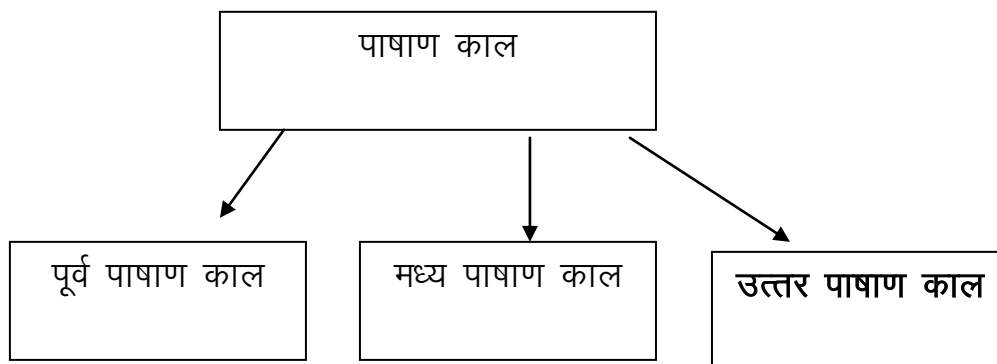
देव युग, वीर युग मानव युग। व्यवहार में उनको क्रमशः प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक युग काल कहा गया है। देवयुग में देवताओं की क्रियाओं की प्रधानता थी, जबकि वीर युग वीरों की बर्बरता की कहानी कहता है। मानव युग अथवा आधुनिक युग सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का वर्णन करता है।

**उद्देश्य** — इस इकाई को पढ़ने के पश्चात्—

- भारत की प्राचीन सभ्यता से परिचित हो सकेंगे।
- सिंधू घाटी की सभ्यता की विशेषताओं व वहाँ की जीवन शैली से परिचित हो सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय शिक्षा के स्वरूप को जान सकेंगे।
- प्राचीन बौद्ध शिक्षा के केन्द्र नालन्दा विश्वविद्यालय आदि की संरचना, शिक्षा, दिक्षा, वहाँ के विद्वानों से परिचित हो सकेंगे।
- हिन्दू शिक्षा के केन्द्र तक्षशिक्षा विश्वविद्यालय काशी, धारा आदि के स्वरूप शिक्षा—दिक्षा व वहाँ के विद्वानों से परिचित हो सकेंगे।

## 1.3 भारत—प्राचीन सभ्यता के रूप में

**1.3.1 परिचय** —मनुष्य क्रमशः आदिम अवस्था से सभ्यता की ओर अग्रसर हुआ। पाषाण कालीन सभ्यता की खोज 1863 में आरंभ हुई। भारत के विभिन्न स्थानों को खोदकर पाषाण कालीन सभ्यता की जानकारी प्राप्त की गयी थी। भारत में आदिमानव का उदय व विकास का प्रारंभिक युग पाषाण काल कहलाता है। जिसे निम्न भागों में बांटा जा सकता है।



### 1.3.2 पूर्व पाषाण काल

- सभ्यता के विकास के प्रथम चरण को पूर्व पाषाण काल कहते हैं।
- इस काल में मानव का असभ्य जीवन प्रकृति पर आश्रित था। वह कन्दराओं में रहकर मांस या कन्दमूल खाकर जीवन यापन करता था।
- जंगली जानवरों से रक्षा करने के लिये वह वृक्षों व लकड़ियों का प्रयोग करता था।
- पत्थर के बने बेडोल आकार के भाले, फरसा, हथोड़ा आदि का प्रयोग वस्तुओं को काटने छीलने व पशुओं के शिकार हेतु करते थे।
- कृषि व पशुपालन के कार्य से अनभिज्ञ थे। व किसी प्रकार की धार्मिक भावना का विकास नहीं हो पाया था।

### 1.3.3 मध्य पाषाण काल

- पूर्व पाषाण काल और उत्तर पाषाण काल के बीच का काल भारत के इतिहास में मध्य पाषाण काल कहलाता है।

- इस काल में पत्थर के हथियार बनाते थे लेकिन उनका आकार छोटा होता था।
- इस काल में मिट्टी के बर्तन बनाना सीख लिया था ।
- इस युग के अवशेष गुजरात, मध्यप्रदेश व कर्नाटक में पाये गये हैं।

### 1.3.4 उत्तर पाषाण युग

- इस काल में उच्च कोटि के हथियार बनना शुरू हो गये थे।
- मानव सभ्यता की आधारशिला इसी काल में रखी गयी। इस समय लोगों ने कृषि करना आरंभ कर दिया था। गेहूं, जौ, बाजरा का उत्पादन करने लगे थे।
- पशुपालन का कार्य शुरू हो गया था।
- मनुष्य अब एक निश्चित स्थान पर रहने लगा था। उसके भ्रमणकालीन जीवन का अंत हो गया था।
- अब अनाजों मांस कन्दमूल का उपयोग भोजन के लिये करने लगे थे।
- कपड़ा बनाना, कढ़ाई बुनाई व रंगाई का कार्य भी सीख लिया था।
- अब लोग एकांकी न रहकर सामाजिक प्राणी बन गये थे। सामूहिक रूप से कबीलों व परिवार में रहने लगे थे।
- इस समय लोगों ने ललित कलाओं के प्रति भी अभिरुचि दिखाई। भीमबटेका होशंगाबाद, पचमढी, सिंधनपुर आदि स्थानों में अनेक रेखाचित्र उस काल की ललित कलाओं व चित्रकला के प्राचीनतम नमूने हैं।
- इस युग में शिवलिंग व मातृदेवी की पूजा होने लगी व अन्य धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण हुआ।

### 1.3.5 सिंधु घाटी सभ्यता

सिन्धु घाटी सभ्यता भारत वर्ष की प्राचीनतम सभ्यता है जिसे सैन्धव सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। सन् 1921 ई. में हड़प्पा और

मोहन जोदड़ों स्थानों पर उत्खनन से इस सभ्यता की जानकारी मिली । प्राचीन सभ्यता हड़प्पा में सिंधु घाटी तक विस्तृत था इसलिये आरंभ से इसे सिंधु घाटी की सभ्यता नाम दिया गया है। यह सभ्यता 5000 ईसा पूर्व की सभ्यता है। सन् 1921 में इस सभ्यता को ढूँढ निकालने का कार्य राखलदास बनर्जी और दयाराम साहनी ने किया।

### 1.3.5.1 सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताये

सिंधु घाटी के खनन से वहां जो वस्तुएं प्राप्त हुई है उनकी विशेषताएं निम्न है।

- नगर निर्माण
- भवन निर्माण
- विशाल स्नानगार
- लोकतांत्रिक व्यवस्था
- कृषि प्रधान सभ्यता
- शांति-प्रधान सभ्यता

सिंधु-घाटी के खनन से जो वस्तुएं प्राप्त हुई है। उनके अध्ययन से सिंधु-सभ्यता की निम्नलिखित विशेषताएं उद्घाटित होती है –

**नगर निर्माण—** सिंधु प्रदेश की सभ्यता शहरी प्रधान सभ्यता थी। सिंधु सभ्यता से संबंधित नगर नदियों के किनारे स्थित थे। अतः उन नगरों को बाढ़ से सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बाध बनाये गये थे। नगरों में सड़को की सुन्दर व्यवस्था थी जो पूर्व में पश्चिम और उत्तर से दक्षिण की ओर जाती थी। एक सबसे

बड़ी सड़क मोहनजोदड़ों में स्थित है, जिसकी चौड़ाई 11 मीटर थी। यह एक राजमार्ग था, नगर की अन्य सड़कें उसमें मिलती थी।

इन सड़कों की सुविधा के कारण शहर का आवागमन सुविधाजनक था। नगरों का निर्माण एक सुनियोजित योजना के आधार पर किये गये थे। सड़कों के दोनों ओर वृक्षारोपण किया गया था। नगरों को साफ-सफाई की सुन्दर व्यवस्था थी। सड़कों का कचरा किनारे में रखे मिट्टी के पात्रों में एकत्र कर लिया जाता था। नगरों में अनेक व्यावसायिक केन्द्र भी थे।

नगरों में गंदे पानी के निकासी के लिये नालियों और मोरियों का उचित प्रबंध था जो सिंधु सभ्यता की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी।

**भवन निर्माण** – उत्खनन में प्राप्त मकानों के अवशेषों से यह विदित होता है कि भवन निर्माण की कला में वहां के निवासियों ने काफी प्रवीणता हासिल कर ली थी। वहां उपलब्ध भवनों के अवशेष से ज्ञात होता है कि लोगों के मकान सभी सुविधाओं से युक्त थे, तथा उनका निर्माण वास्तुकला के सिद्धांतों के अनुरूप किये गये थे। वहां सभी प्रकार के छोटे बड़े और कच्चे पक्के मकान देखने को मिले। इन भवनों का निर्माण एक निश्चित योजना के अन्तर्गत सड़कों के दोनों ओर बनाये गये थे। अधिकांश मकान पक्के ईंटों से बनाये गये थे। मकान में आने जाने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था थी। घर के अन्दर के गंदे पानी के निकासी के लिए नालियों का प्रबंध था, जो ढकी होती थी और बाहर की नालियों से जुड़ी रहती थी। सभी घरों में रसोई घर, शौचालय, गृह और स्नानागार की व्यवस्था थी। उनमें हवा और प्रकाश की सुन्दर व्यवस्था थी।

**विशाल स्नानागार** – मोहन जोदड़ों में एक विशाल सुन्दर और आश्चर्यजनक स्नानागार का पता चला है, जिसका निर्माण बहुत से सुन्दर ढंग से और मजबूत किया गया है। इसकी लम्बाई 180 फीट, चौड़ाई 23 फीट और गहराई 8 फीट है। स्नानागार से उतरने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। उसके एक छोर पर 611 फीट की एक ऊंची नाली बनी हुई है जिसकी सहायता से उसके गंदे पानी को बाहर निकाला जाता था और उसमें ताजा पानी भरा जाता था। समय-समय पर

जलाशय की सफाई की जाती थी। स्नानागार में पानी भरने के लिये उसके पास एक कुआँ बना हुआ है। इसका उपयोग जन-साधारण लोग करते थे। स्नानागार के चारों ओर बरामदे हैं। और उसके पीछे अनेक छोटे बड़े कमरों का निर्माण किया गया है।

उपरोक्त विवरण से यह विदित होता है कि सिंधु प्रदेश में सुनियोजित नगर योजना थी, जहाँ आरामदायक भवनों का निर्माण किया गया था, जो सभी आवश्यकता सुविधाओं से युक्त थे। सुविधाओं के मद्देनजर यह ज्ञात होता है कि वहाँ के निवासियों का जीवन सुखी एवं सम्पन्न था और वे सुखी ऐश्वर्य एवं बिलासिता का जीवन व्यतीत करते थे।

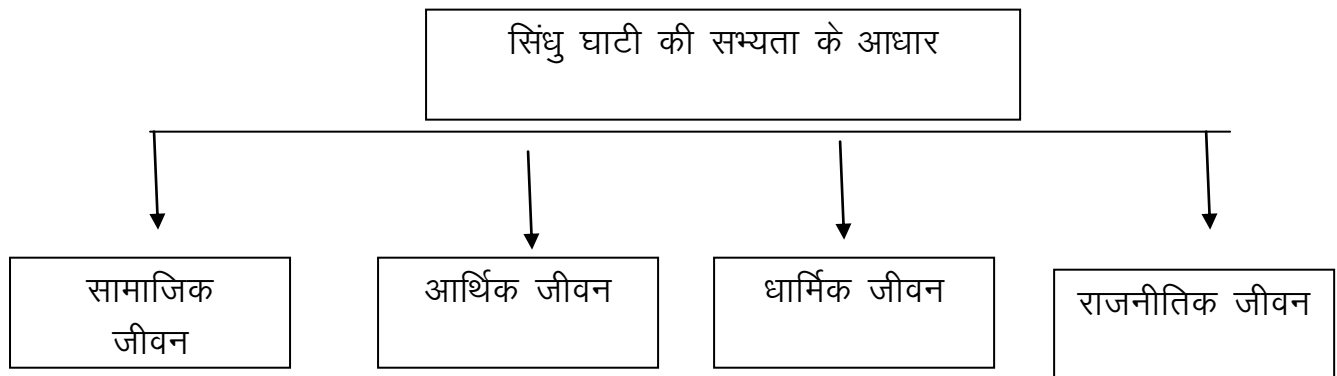
**लोकतांत्रिक व्यवस्था—** सिंधु घाटी की सभ्यता का स्वरूप लोकतांत्रिक था। यह इस तथ्य से प्रकट होता है कि वहाँ अनेक बड़े-बड़े सभा भवनों का निर्माण किया गया था, वहाँ जनप्रतिनिधि उपस्थित होकर शासन संबंधी कार्यों का संचालन किया करते थे। वहाँ राजा के निवास के लिए कोई राज महल नहीं था, जिससे यह बात प्रमाणित होती है कि वहाँ राजतंत्रात्मक व्यवस्था नहीं थी।

**कृषि प्रधान सभ्यता —** वह एक कृषि प्रधान सभ्यता थी। वहाँ की अधिकांश जनता कृषि का कार्य करती थी। सिंध नदी के आसपास की भूमि उपजाऊ थी इसलिए स्वाभाविक रूप से वहाँ बड़े पैमाने पर कृषि कार्य किया जाता था। कृषि कार्य की संस्कृति के अनुसार वहाँ के निवासियों में आपसी सहयोग एवं सहकार की भावना विद्यमान थी।

**शांति प्रधान सभ्यता —** सिंधु प्रदेश के निवासी स्वभाव से शांतिप्रिय थे। युद्ध, आक्रमण, और हिंसात्मक कार्यों में संलग्न होना उनके स्वभाव के विपरीत था, इसलिए वहाँ लम्बे समय तक कोई युद्ध नहीं हुआ। उनकी इस विशेषता के कारण वहाँ दीर्घकाल तक शांति विराजमान थी, जिसके कारण वे सदैव रचनात्मक कार्यों में लगे रहे। यही कारण था कि वहाँ एक उन्नत सभ्यता विकसित हुई। इस प्रकार यह एक सभ्यता शांति प्रधान थी।



**1.3.5.2 – सिन्धु घाटी सभ्यता के आधार सभ्यता निम्न आधारों पर विस्तृत रूप से समझा जा सकता है।**



**1.3.5.2.1 – सामाजिक जीवन—** सिंधु घाटी की सभ्यता का सामाजिक जीवन उच्च स्तरीय था। उत्खनन में प्राप्त वस्तुओं के अध्ययन से वहां के लोगों के रहन सहन उनकी वेशभूषा, खान-पान आदि की जानकारी मिलती है। वहां की सुन्दर नगर योजना व्यवस्थित आवास योजना इस तथ्य को उजागर करते हैं कि उस समय लोगों का सामाजिक जीवन उंचे स्तर का रहा होगा। निम्न बिन्दुओं के साथ सामाजिक जीवन का पता लगाया जा सकता है :—

- सामाजिक संगठन
- भोजन
- वेश भूषा और आभूषण
- मनोरंजन के साधन
- स्त्रियों की दशा

सिंधु प्रदेश का समाज कार्यों के आधार पर विभक्त था। शिक्षित वर्ग योद्धा वर्ग व्यापारी वर्ग, किसान एवं मजदूर। इस तरह के वर्ग भेद के होते हुये भी वहां के लोगों के जीवन स्तर में कोई बड़ा अंतर नहीं था। सभी वर्गों के मकान, वेशभूषा एक ही तरह के होते थे। सभी लोग अपने-अपने दायित्वों का निर्वाह उत्साह के साथ करते थे।

यहां का मुख्य आहार गेहूं, जौ, चावल आदि था। कुछ लोग मांस मछली भी खाते थे अर्थात् दोनों प्रकार का भोजन करते थे। यहां के निवासी सूती व उनी कपड़ों का प्रयोग करते थे। स्त्रियां घाघरा पहनती थी उसके उपर एक चादर ओढ़ती थी। पुरुष, धोती पहनते थे। स्त्री पुरुष दोनों आभूषणों का प्रयोग करते थे स्त्रीयां अपने सौंदर्य को उभारने के लिये कंधी दर्पण, काजल, सूरमा, सिंदूर आदि का प्रयोग करते थे। मनोरंजन के लिए नाचना गाना बजाना आखेट यहां के निवासियों के मनोरंजन के साधन थे। स्त्रियों की दशा सम्मान जनक थी उनका मुख्य कार्य शिशु पालन था।

#### 1.3.5.2.2 – आर्थिक जीवन

सिंधू नदी के आसपास का क्षेत्र उपजाऊ था, इसलिए उनको मुख्य कार्य कृषि था। अनेक फसलों का वे प्रचुर मात्रा में उत्पादन करते थे। सिंधू प्रदेश की आर्थिक स्थिति का निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं

- ✓ कृषि
- ✓ पशुपालन
- ✓ उद्योग और व्यवसाय
- ✓ व्यापार
- ✓ उद्योग धंधे
- ✓ मुद्रायें

सिंधु प्रदेश में गेहूं, जौ, मटर, चावल, सरसों, तिल आदि का उत्पादन करते थे। फलों में खजूर व तरबूज का भी बड़ी मात्रा में उत्पादन होता था। दूसरा महत्वपूर्ण व्यवसाय पशुपालन था। कृषि में जानवरों के उपयोग होता था। साथ ही दूध का उत्पादन भी बड़ी मात्रा में किया जाता था। मिट्टी का मूर्तियां और खिलौने, धातुओं के बर्तन, औजार, खिलौने आदि कार्य में यहां के लोग दक्ष थे।

सिंधु प्रदेश का व्यापार उन्नत अवस्था में था। वहां के निवासी सोना, चांदी, तांबे का आयात करते थे। व्यापारिक वस्तुओं को लाने ले जाने के लिये जहाजों व

बेलगाड़ियों का प्रयोग होता था। यहां विभिन्न प्रकार के धंधे होते थे। शिल्पी वर्ग में सुनार, कुम्हार, लुहार, जौहारी, बुनकर, हाथी के दांत के शिल्पी आते थे।

खनन से पाषाण व मिट्टी की मुहरे भी प्राप्त हुई है जिनपर बैल, हाथी, गैंडा, बारह सिंघा के चित्र अंकित हैं।

#### 1.3.5.2.3 – धार्मिक जीवन

इतिहासकार मार्शल के अनुसार वहां मातृदेवी की पूजा प्रचलित थी। वहां ऐसी मूर्तियां मिलती हैं जिससे शिव पूजा होने की बात ज्ञात होती है। कुछ विद्वानों का कहना था कि वहां पशु पूजा, वृक्षों की पूजा भी होती थी। पूजा करते समय लोग अग्नि व धूप का प्रयोग करते थे। गाना बजाना भी होता था प्राप्त ताबीजों के आधार पर यह अंदाज लगाया जा सकता है कि वे लोग अंधविश्वासी भी थे।

#### शव विसर्जन की तीन विधियां मान्य थी—


1. सम्पूर्ण शरीर को पृथ्वी के अन्दर गाड़ दिया जाता था।
2. शव को आग में जला कर भस्म कर दिया जाता था।
3. शव को पशु पक्षियों के द्वारा खा लेने के बाद शेष बची हड्डियों को गाड़ दिया जाता था।

#### 1.3.5.2.4 – राजनीतिक जीवन

सिंधु प्रदेश के एक ही प्रकार की शासन पद्धति व राजनीतिक संगठन होना इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि वहां एक ही प्रकार की मूर्तियों एवं लिपि का प्रचार था। सम्पूर्ण सिंधु प्रदेश की दो राजधानियां थीं।

1. उत्तरी राज्यों की राजधानी हड़प्पा
2. दक्षिणी राज्यों की राजधानी मोहन जोदड़ों थी।

सिंधु प्रदेश के राजनीतिक जीवन को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है :—

 स्थानीय स्वशासन

✚ कला

✚ हथियार

✚ लिपि

✚ विदेशों से संबंध

सिंधु प्रदेश में दुर्ग व भवनों के अवशेष का मिलना इस बात को स्पष्ट करता है कि वहां अधिकारीगण रहते होंगे व प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन करते रहे होंगे। शासक व शासित दोनों ही शांति प्रिय थे, समाज में विषमता का अभाव था।

यहां की कला उन्नत व विकसित थी। खुदाई के द्वारा प्राप्त मूर्तियां बर्तन मुहरे, आभूषण आदि बड़े सुन्दर व मनोहर थे। वहां के लोग भवन निर्माण की कला में निपुण थे व नगर साफ सुथरे व नियोजित थे। भवनों का निर्माण सड़क के किनारे पंक्तिबद्ध रूप से किया गया था। हथियार के रूप में पत्थर के बने भाले, खंजर कुदाल, गदा, आदि हथियार व धनुष बाण भी प्राप्त हुए हैं।

सिन्धु देश की लिपि के बारे में अभी तक निश्चित जानकारी नहीं हो पायी है। सिन्धु घाटी की सभ्यता पंजाब से लेकर ईराक तक फैली हुई थी। उनका व्यापार कश्मीर, मध्य एशिया और मिश्र से होता था। व्यापार के साथ-साथ उनके मध्य सांस्कृतिक संबंध भी थे। किसी व्यक्ति, समाज और राज्य के पतन की प्रक्रिया शाश्वत है इसी नियम के तहत इस विकसित सभ्यता का कुछ समय बात अंत हो गया।

#### अपनी प्रगति की जांच करें

प्रश्न – सिंधू घाटी की सभ्यता की विशेषताएं संक्षिप्त में लिखे।

.....

प्रश्न – सिन्धु घाटी सभ्यता के धार्मिक जीवन का उल्लेख करें

.....

.....



**गतिविधि विधि** – निम्न आधार बिन्दुओं के आधार पर सिन्धु घाटी सभ्यता व वर्तमान युग में अन्तर करें।

- सामाजिक जीवन
- आर्थिक जीवन
- धार्मिक जीवन
- राजनीतिक जीवन

(अन्तर करते हुए एक सूची बनाये व विश्लेषण करें कौन से बिन्दू सिन्धु घाटी की सभ्यता के वर्तमान युग से ज्यादा महत्वपूर्ण लगे व क्यों।)

#### **1.4 प्राचीन भारतीय शिक्षा परिचय**

भारतीय समाज में प्राचीन काल से शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त ज्ञानपरक सुव्यवस्थित और सुनियोजित था जिसमें व्यक्ति के लौकिक और पारलौकिक जीवन के लिये विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी। मनुष्य व समाज का आध्यात्मिक ओर बौद्धिक उत्कर्ष शिक्षा के माध्यम से सम्भव माना जाता रहा है। प्राचीन काल में सभ्यता के उत्कर्ष के साथ-साथ शिक्षा का भी विकास होता गया। भौतिक ओर अध्यात्मिक जीवन के निर्माण के लिये तथा विभिन्न उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिये शिक्षा की नितान्त आवश्यकता थी। मनुष्य और समाज का आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कर्ष शिक्षा के माध्यम से संभव माना जाता रहा है।

##### **1.4.1. – प्राचीन शिक्षा के केन्द्र**

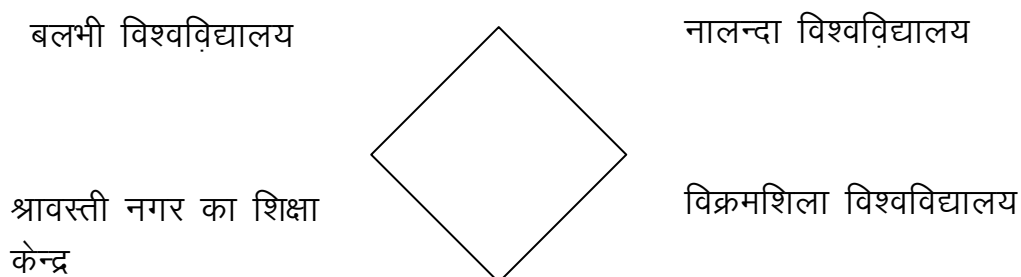
प्राचीन शिक्षा के केन्द्रों को दो भागों में बांटा जा सकता है:—

1. बौद्ध शिक्षा के केन्द्र
2. हिन्दू शिक्षा केन्द्र

#### 1.4.1.1 – बौद्ध शिक्षा के केन्द्र

बौद्ध शिक्षण प्रवृत्ति का आरंभ स्वयं महात्मा बुद्ध ने किया। जिसमें सरल और सुबोध जनभाषा में जीवन के तत्वों की चर्चा थी। बौद्ध शिक्षा पद्धति में सत्य, दार्शनिक तथ्य, तर्क, पर्यवेक्षण मनन आदि पर आर्थिक बल दिया गया है। बुद्ध के बाद इस बात की आवश्यकता प्रतीत की गयी कि जन साधारण की बौद्ध के प्रति जागरूक करना चाहिये। इससे धीरे-धीरे समाज में बौद्ध शिक्षा का प्रसार होने लगा इसके साथ ही बौद्ध धर्म संबंधी स्वतंत्र शिक्षण संस्थानों का उदय हुआ। बाद में चल कर मठ विहार, बौद्ध शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गये जहां प्रमुख रूप से बौद्ध धर्म और दर्शन की शिक्षा दी जाती थी।

#### बौद्ध शिक्षा के केन्द्र



#### 1.4.1.1.1. – नालन्दा विश्वविद्यालय

प्राचीन काल के उत्तरार्ध में नालन्दा विश्वविद्यालय अभूतपूर्व ख्याती प्राप्त कर चुका था जहां बौद्ध धर्म और दर्शन की शिक्षा के अतिरिक्त अन्य विषयों की शिक्षा भी दी जाती थी। वैसे तो नालन्दा की ख्याति महात्मा बुद्ध ने समय से भी बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र की यह जन्म भूमि थी। कालान्तर में अशोक महान ने वहां एक

विशाल विहार का निर्माण कराया था। इसकी प्रमुखता पांचवी सदी के मध्य में अधिक बढ़ी जब बौद्ध विद्वान दिङनाग ने नालन्दा में जाकर वहां के विख्यात पंडित सुदुर्गम को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। समय-समय पर गुप्त राजायों ने नालन्दा के विकास में सराहनीय योग प्रदान किया। नालन्दा विश्वविद्यालय को निम्न विशेष टापों के आधार पर समझा जा सकता है :-

- ❖ संरचना
- ❖ आय के साधन
- ❖ प्रवेश के नियम
- ❖ विद्यार्थी एवं शिक्षक
- ❖ पुस्तकालय
- ❖ शिक्षक एवं शिक्षण पद्धति

**संरचना** — 'श्वानत्वांग के विवरण से विदित होता है कि अनेकानेक बौद्ध विहारों का निर्माण यहां किया गया था। विहारों में कुछ तो काफी बड़े और भव्य थे जिनके गगनचुम्बी शिखर अत्यन्त आकर्षक थे। इनमें अनेक जलाशय थे जिसमें कमल तैरते थे। यहां कई विशालकाय भवन थे। जिनमें छोटे बड़े अनेक कक्ष थे। विश्वविद्यालय भवन में व्याख्यान के निमित्त विशालकाय कक्षा व 300 छोटे बड़े कक्ष थे। विद्यार्थी छात्रावासों ने रहते थे।

**आय के साधन** — नालन्दा विश्वविद्यालय के खर्चे के लिये 200 गांव दान में प्राप्त थे जिनकी आय से यहां के भिक्षु कार्यकर्ताओं व अध्येताओं का पोषण होता था। यही नहीं इन गांवों के निवासी प्रतिदिन कई मन चावल दूध यहां भेजा करते थे। विद्यार्थियों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। उनके आवास व भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा निशुल्क की जाती थी।

**प्रवेश के नियम** — इस शिक्षा संस्थान में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिये बड़े नियम थे। प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थी को सबसे पहले द्वारपाल से वाद विवाद करना पड़ता था तथा उसकी शंकाओं का समाधान करना आवश्यक था।



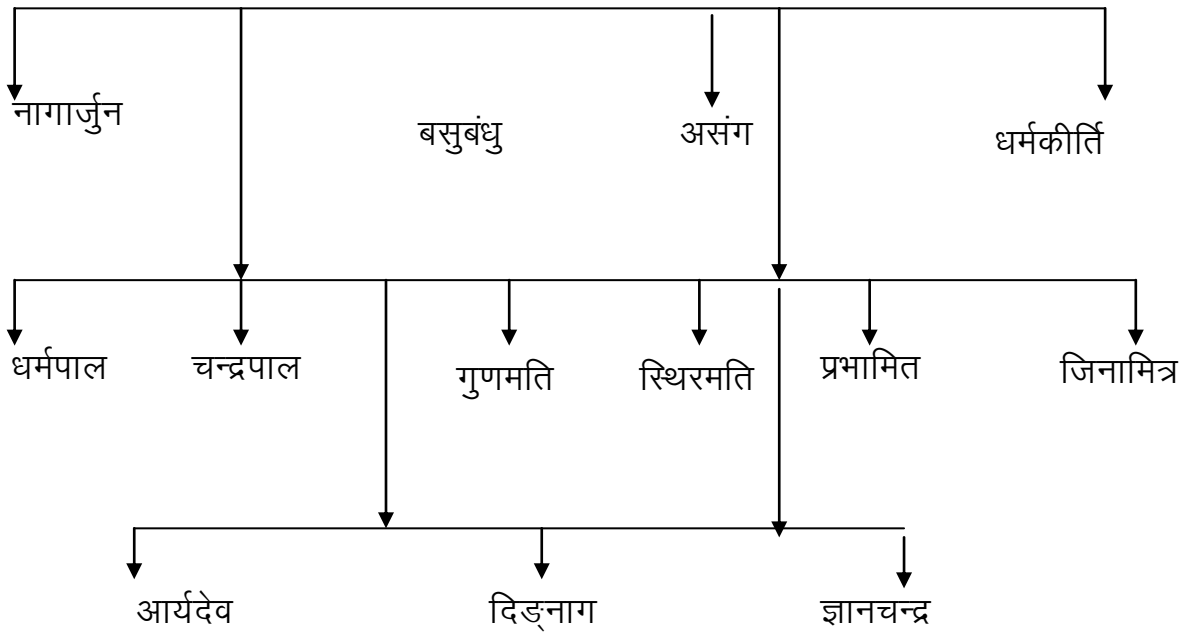
प्रश्नों में से 8–10 विद्यार्थी असफल भी हो जाया करते थे और एक दो सफल। अपने अपने विषय से संबंधित यहां पर अनेक विद्वान थे।

**विद्यार्थी एवं शिक्षक** – विश्वविद्यालय में शिक्षकों की संख्या 1510 थी। जिनमें 1010 सूत्र निकायों में दक्ष थे। शेष 500 अन्य विषयों के दक्ष थे। श्वानच्चांग के समय इस विश्वविद्यालय का प्रधान कुलपति शील भद्र था। जो अनेकानेक विषयों में पारंगत था। उनके पहले धर्मपाल यहां के कुलपति थे। यहाँ विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। सुदूर देशों व विदेशों से विद्यार्थी यहां आकर शिक्षा प्राप्त करते थे। चीन तिब्बत, कोरिया, तुखार आदि देशों के विदेशी शिक्षार्थी यहां रहकर ज्ञात प्राप्त करते थे व अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न विषयों की शिक्षा ग्रहण करते थे।

**पुस्तकालय** – धर्मयज्ञ नामक विशाल पुस्तकालय विद्यार्थियों के अध्ययन के लिये था। ईन्सिंग ने स्वयं 400 संस्कृत पुस्तकों को प्रतिलिपियाँ तैयार की थी। जिनमें लगभग 5 लाख श्लोक थे। रत्न सागर, ग्लोदधि व रत्नरंजक नामक तीन भवनों से मिलकर भव्य पुस्तकालय का निर्माण हुआ था। जिसमें हमेशा जिज्ञासु व अध्ययनशील विद्यार्थियों की भीड़ रहा करती थी।

**शिक्षक एवं शिक्षण पद्धति** – विश्वविद्यालय में एक अध्यापक 9 या 10 विद्यार्थियों को पढ़ाता था यहां के कक्ष बहुधा बड़े-बड़े थे इनमें 8 विशाल व्याख्यान भवन थे व 300 छोटे व्याख्यान कक्ष भी थे। सभी विषयों को मिलाकर लगभग 100 व्याख्यानों का आयोजन किया जाता था। यहाँ खासतौर पर महायान शाखा का अध्ययन कराया जाता था। पालि भाषा की शिक्षा अनिवार्य रूप से प्रदान की जाती थी। यहां अपने-अपने विषय के प्रकांड पंडित थे जो भारत के विभिन्न प्रदेशों से आकर यहां अध्ययन-अध्यापन करते थे। ये विद्वान निम्न है।

## विश्वविद्यालय के विद्वान आचार्य



### अपनी प्रगति की जांच करें।

प्र.1 बौद्ध शिक्षाके केन्द्र कौन—'कौन से है ?

.....  
.....

प्र.2 नालन्दा विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षक व शिक्षण पद्धति बारे में संक्षिप्त लेख लिखो

.....  
.....

### गतिविधि

नालन्दा विश्वविद्यालय का भवन संरचना शिक्षक, पुस्तकालय आदि के चित्र इकट्ठा कर एक रिपोर्ट तैयार करें।

#### 1.4.1.1.2 – वलभी विश्वविद्यालय

गुजरात – कठियावाड़ के समुद्र के निकट स्थित बलमी एक अन्तराष्ट्रीय बन्दरगाह नहीं था बल्कि शिक्षा का भी प्रधान केन्द्र था। यह नालन्दा विश्वविद्यालय के साथ-साथ विकसित हुआ था। सातवीं शताब्दी तक इसकी ख्याति देश के विभिन्न भागों में हो गयी थी।

#### विहार एवं मठ –

इस शिक्षा केन्द्र में सर्वप्रथम विहार का निर्माण राजकुमारी टड्डा ने कराया था। दूसरा विहार राजा धरसेन ने 580 ई० में बनवाया था जिसका नाम श्री वप्पपाद था इस विहार का निर्देशन और प्रशासन आचार्य स्थिरमति करते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय की तरह वलभी का भी महत्व था। यहाँ अनेक विशाल बौद्ध विहार मठ थे। 100 विहार व 6000 भिक्षुओं का विवरण श्वानच्चांग ने भी दिया है।

**शिक्षा –** बौद्ध शिक्षा का प्रधान केन्द्र होने के कारण दूर-दूर के स्थानों से विद्यार्थी यहां शिक्षा ग्रहण करने आते थे। गंगा की तलहटी से अनेक ब्राह्मण भी अपने पुत्रों को यहां शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजते थे। स्थिरमति व गुणमति नामक विद्वान इसी विश्वविद्यालय की शोभा थे। तर्क, व्याकरण, व्यवहार, साहित्य आदि विषयों की शिक्षा यहां दी जाती थी।

#### आर्थिक स्थिति –

इस विश्वविद्यालय की आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ थी। वलभी में 100 करोड़पति रहते थे, जिनका आर्थिक सहयोग इसे प्राप्त था। अनेक राजाओं ने भी इसे दान व भेट स्वरूप समुचित धन प्रदान किया था। ग्रंथों के लिये भी यहाँ पर दान प्राप्त होते रहते थे। बारहवीं सदी के पश्चात् जब मुसलमानों का आक्रमण त्रीवता से होने लगा तब इस शिक्षा केन्द्र पर भी उसका प्रभाव पड़ा और इसका महत्व घटने लगा।

#### 1.4.1.1.3 विक्रमशिला विश्वविद्यालय

आठवीं सदी में बंगाल पालवंशीय शासक धर्मपाल ने बिहार प्रदेश में इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। पूर्व मध्य युग में शिक्षा के केन्द्रों में इसकी सर्वाजनिक ख्याति थी।

#### बौद्ध आचार्य एवं विद्वान

विश्वविद्यालय के अनेकानेक विद्वानों ने विभिन्न ग्रन्थों की रचना की जिनका बौद्ध साहित्य व इतिहास में नाम है, निम्न है।

- रक्षित
- विरोचन
- ज्ञानपद
- वृद्ध
- जेतारि
- रत्नाकर
- शान्ति
- ज्ञानश्री
- रत्नवज्र
- दीपशंकर
- अभयशंकर

**शिक्षा** — विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म और दर्शन के अतिरिक्त न्याय तत्वज्ञान, व्याकरण यदि की भी शिक्षा दी जाती है। देश के ही नहीं बल्कि विदेशी (तिब्बत) छात्र यहाँ अध्ययन के लिये आते थे। शिक्षा समाप्ति के बाद विद्यार्थी को उपाधि प्राप्त होती थी जो उसके विषय की दक्षता का प्रमाण मानी जाती थी।

**आर्थिक स्थिति व प्रशासन** — इस विश्वविद्यालय का समस्त व्यय बड़े-बड़े लोगों के दान व भेंट का आघृत था । आवास व भोजन का प्रबन्ध विश्वविद्यालय की ओर से किया जाताथा। भिक्षु अध्यापक प्रबन्ध में हाथ बटाते थे। घर द्वार पण्डितों की समिति द्वारा इसका संचालन होता था। पूर्वमध्ययुग में मुसलमानों ने आक्रमण के कारण अनेक भारतीय शिक्षा मंदिरों का विनाश हुआ उसमें विक्रम शिला भी था जिसे वख्तियार खिलजी ने तोड़कर और जलाकर नष्ट कर दिया था।

#### **1.4.1.1.4 — श्रावस्ती नगर का शिक्षा केन्द्र**

बुद्ध के जीवन काल में ही श्रावस्ती नगर बौद्ध धर्म व शिक्षा का केन्द्र बन चुका था। प्रमुख श्रेष्ठि अनाथपिंडक ने बुद्ध के समय में नगर के निकट जेतवन विहार का निर्माण कराया था जहाँ बौद्ध ज्ञान व आचार की शिक्षा दी जाती थी।

**संरचना** — शिक्षा केन्द्र 130 एकड़ में फैला हुआ व विस्तृत था। 120 भवन व अनेक कक्ष थे। भिक्षु छात्रों व बौद्ध आचार्यों के रहने के लिये सुन्दर आवास थे। स्नानगार, औषधालय, पुस्तकालय, अध्ययन कक्ष व व्याख्यान कक्ष उसमें बने हुये थे। पानी के लिये जलाशय छाया हेतु वृक्ष व पशुओं के लिए जलाशय, छाया हेतु वृक्ष व पशुओं का आना अवरुद्ध करने हेतु बाड़े लगवाई गयी थी।

अशोक व सम्राट अशोक के समय में श्रावस्ती विहार बौद्ध ज्ञान और दर्शन का प्रमुख केन्द्र था जहां दूर-दूर से भिक्षु आकर ज्ञान प्राप्त करते थे।

**1.4.1.1.5 — अन्यान्य बौद्ध शिक्षा केन्द्र** नालन्दा विक्रमशिला वलभी व श्रावस्ती शिक्षा केन्द्रों के अलावा देश में अनेक बौद्ध शिक्षा के केन्द्र थे। ऐसे बौद्ध विहार व मठ थे जो छोटी-छोटी पाठशालाओं के रूप में विकसित हो गये थे। काश्यप बुद्ध संजाराम बौद्ध ज्ञान के लिये ख्यात था। कश्मीर स्थित विहार के बुद्ध भिक्ष ने श्वानच्चांग को अन्य शास्त्रों के अतिरिक्त कोश, न्याय की भी शिक्षा दी थी।

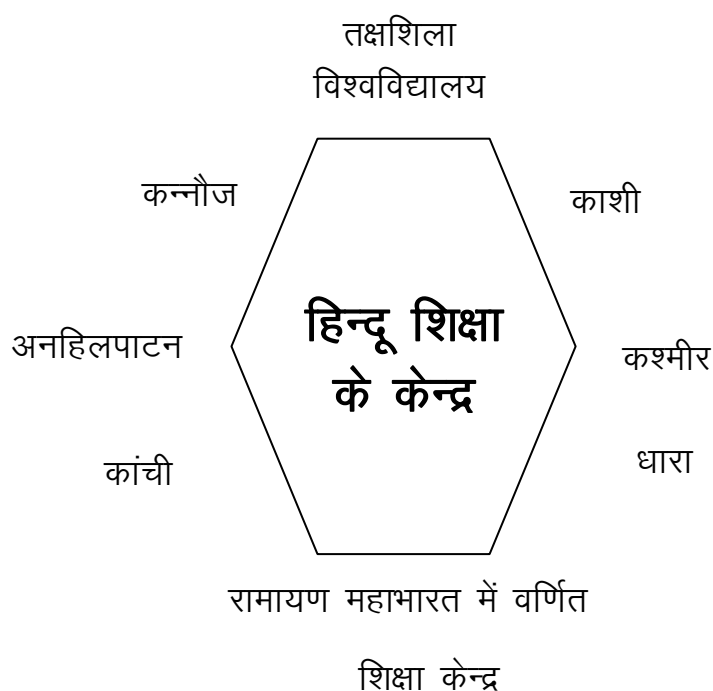
जालन्धर का बौद्ध विहार भी बहुत प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र था। जहां श्वानच्चांग ने चार मास रहकर सर्वास्तिवाद का अध्ययन किया था। वाराणसी में भी तीस विहार थे जो सर्वास्तिवाद सिद्धान्त के प्रधान अध्ययन केन्द्र थे। कपिलवस्तु विद्या और

शिल्प का केन्द्र था। जहां गौतम बुद्ध को विभिन्न शिल्प व विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ था बुद्ध काल में व उसके बाद वैशाली, राजगृह कपिलवस्तु श्रावस्ती आदि बौद्ध शिक्षा प्राप्ति के प्रधान स्थल थे। कपिलवस्तु का निग्रोजाराम विहार, पर्वाराम विहार वैशाली का आमवन विहार व राजगृह का वेणुवन विहार बहुत अधिक प्रसिद्ध थे।

#### 1.4.1.2 – हिन्दू शिक्षा के केन्द्र

प्राचीन काल से हिन्दू ज्ञान विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने के लिये विभिन्न अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की गयी थी। वैदिक युग में तो गुरुकुल ही शिक्षा प्रदान करने के प्रधान केन्द्र थे। प्रमुख राजधानियों व बड़े-बड़े नगरों के अतिरिक्त छोटे –छोटे गांव भी शिक्षा के केन्द्र थे। ऐसे गांव अग्रहार कहे जाते जिनकी व्यवस्था के लिये राजा की ओर से कुछ गांव विद्वान शिक्षक ब्राह्मण को प्रदान किये जाते थे। बौद्ध विहारों की तरह हिन्दू मन्दिर भी शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित हुए। काशी, कांची कर्नाटक नसिक जैसे नगर अपने आप विधा केन्द्रों के रूप में परिवर्तित होकर विख्यात हुए।

तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कन्नौज, धारा, अनहिलपार्टन नामक विभिन्न राजधानियां प्रधान शिक्षा केन्द्रों के रूप में जानी गई। मुख्य हिन्दू शिक्षा केन्द्र निम्न है।



#### 1.4.1.2.1 – तक्षशिला विश्वविद्यालय

प्राचीन काल से तक्षशिला (अब पाकिस्तान स्थित) ज्ञान व विधा के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रसिद्ध था।

**स्थापना** – इसकी स्थापना भरत ने की थी व इसका प्रशासन तक्ष को सौंपा गया था। अतः तक्ष के नाम पर इस स्थान का नाम तक्षशिला हुआ।

**विद्यार्थी** – उत्तरवेदिक काल में ही तक्षशिला एक नगर के रूप में विकसित हो चुका था। देश के विभिन्न स्थानों से छात्र यहां आकर आचार्यों के सानिध्य में रहकर शिल्प का ज्ञान प्राप्त करते थे। यहां वेदों के साथ हस्तिसूत्र, धनुर्वेद आयुर्वेद एवम् 18 शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी। वाराणसी पाटलीपुत्र, राजगृह, मिथिला उज्जयिनी आदि नगरों के विद्यार्थी यहां आते थे। निम्न सम्राट व विद्वानों ने यहां से शिक्षा प्राप्त की

- प्रसेनजित
- चन्द्रगुप्त मौर्य
- अर्थशास्त्री कोटिल्य
- वैद्य जीवक
- पाणिनि
- पतंजलि
- उपमन्यु
- आरुणि
- वेद

**शिक्षा-दिक्षा**— यहाँ विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। वेदत्रयी अष्टादश शिल्प व्याकरण दर्शन आदि विषय यहां पढ़ाये जाते थे। आयुर्वेद शल्यचिकित्सा, धनुर्विधा, ज्योतिष, भविष्य कथन व्यापार कृषि, मुनीमी, संगीत, नृत्य, चित्रकला,

अष्टादश का ज्ञान दिया जाता था। ब्राम्हण के साथ क्षत्रिय भी वेदाध्ययन, करते थे व क्षत्रिय के साथ ब्राम्हण भी धनुर्विधा सीखते थे।

जातक युग में नैष्ठिक ब्रह्मचारियों की संख्या बहुत अधिक थी। यहां के एक आचार्य के निर्देशन में पांच-पांच सी छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे शिक्षा का प्रधान उद्देश्य था

### स्वोतः सुख, न कि उपाधि प्राप्ति।

शिक्षा प्राप्त करने व शिक्षा देने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सभी समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। यह इस युग की जाति व्यवस्था के लचीलेपन की ओर इंगित करता है धनी निर्धन दोनों प्रकार के छात्र समान रूप से गुरु के शिष्य हो सकते थे। धनी छात्र धन राशि के साथ गुरु दक्षिणा देता था। निर्धन छात्र श्रम करके गुरु दक्षिणा प्रदान करता था। योग्य व मेधावी छात्रों को राजकीय सहायता पर शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा जाता था।

तक्षशिला के शिक्षा केन्द्रका महत्व चौथी सदी तक ही था क्योंकि पांचवी सदी में भारत की यात्रा करने वाले फरमेन ने इस स्थान से संबंधित ऐसा कोई विवरण नहीं दिया।

#### **अपनी प्रगति की जांच करें**

प्रश्न – हिन्दू शिक्षा के केन्द्र कौन-कौन थे ? नाम लिखें।

.....  
.....

प्रश्न – तक्षशिला विश्वविद्यालय के विद्वानों के नाम बताये जिन्होंने यहां से शिक्षा प्राप्त की।

.....  
.....

#### **विश्लेषण करें ।**

प्राचीन शिक्षा पद्धति व शिक्षा केन्द्रों का अध्ययन करते हुये विश्लेषण करे कि कौन सी विशेषताएँ आज की शिक्षा पद्धति हेतु भी उपयुक्त है व क्यों ?



**1.4.1.2.2. काशी** — विद्या और शिक्षा में काशी का महत्व वैदिककालीन है। उपनिषद् युग में काशी एक प्रतिष्ठित शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित हो चुकी थी। काशी के शासक अजातशत्रु अपनी जाननगरिमा प्रतिभा और विद्वत्ता के लिये ख्यात था। उनसे शिक्षा ग्रहण करने के लिये दूर देशों से विधार्थी काशी आते थे। तेइसवें जैन तीर्थकार पार्श्वनाथ काशी के शासक अश्वसेन के पुत्र थे। जिन्होंने जैन धर्म की आचार संहिता निर्मित की थी।

वैदिक दर्शन, ज्ञान, तर्क और शिक्षा में काशी अग्रणी था। भगवान बुद्ध ने अपने ज्ञान का प्रसार यही से किया था।

**संरचना** — अशोक ने यहां बौद्ध विहारों और मठों का निर्माण किया था। काशी विहारों, चैत्यों, स्तूपों और भवनों से रचा बसा था। यहाँ अनेक मंजिल वाले भवन थे, जो अत्यंत आकर्षक व लुभावने थे। स्पष्ट है कि काशी वैदिक, जैन बौद्ध तीनों शिक्षाओं की केन्द्रस्थली थी।

#### **1.4.1.2.3 रामायण महाभारत में वर्णित केन्द्र**

- ❖ प्रयाग में संगम के तट पर महर्षि भारद्वाज का आश्रम था। निवास आवास के लिये व अध्ययन मध्यपान के लिये पाठशाला का निर्माण किया गया था। हवन, पूजन, वेदपाठ के साथ विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी।
- ❖ चित्रकूट में बाल्मीकि का आश्रम था जो मन्दकिनी नदी के तट पर स्थित था। यहां अध्ययन के लिये छात्र निवास करते थे।
- ❖ गुरु वशिष्ठ के आश्रम में भी ज्ञान प्रदान किया जाता था।
- ❖ महर्षि अगस्त्य का आश्रम दण्डकारण्य में था यहां शिष्य यज्ञ व अध्ययन में लगे रहते थे।
- ❖ मालिनी नदी के तट पर ब्रह्मर्षि कण्व का आश्रम था। यहां अनेकानेक विधार्थी, विभिन्न दार्शनिक विचारों पर विधार्थियों को व्याख्यान दिये जाते थे।
- ❖ हिमालय पर्वत पर महर्षि व्यास का आश्रम था जहां वेद अध्ययन किया जाता था।

**1.4.1.2.3 धारा** – धारा मालवा के परमारों की राजधानी थी। मध्ययुग में यह नगर विधा व ज्ञान का प्रधान केन्द्र बन गया था। भुंज के शासन काल में धारा नगरी हिन्दू धर्म व शिक्षाका प्रधान केन्द्र बन चुकी थी सम्राट भोज शासक मुंज की भंति विद्वान व प्रतिभाशाली शासक थे। वह राजनीति दर्शन, ज्योतिष, वस्तु, काव्य, साहित्य व्याकरण, चिकित्सा आदि विषयों के ज्ञाता थे। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। अनेक विद्यालयों की स्थापना की । भोज की मृत्यु पर किसी कवि ने कहा कि धारा आधारहीन हो गयी, सरस्वती आश्रयहीन दी गयी।

**1.4.1.2.4 – कन्नौज** – उत्तर भारत में कन्नौज का विकास हर्ष के समय से ही हो गया था। यह नगरी राजधानी ही नहीं बल्कि हिन्दू बौद्ध विधा, शिक्षा की केन्द्र स्थली थी। अनेक विषयों के ज्ञात यहां की शोभा बढ़ाते थे। बाणने ऐसे ही आचार्य कुल में शिक्षा प्राप्त की थी। हर्ष ने स्वयं कई ग्रन्थों की रचना की प्रतिहारों के युग में भी कन्नौज उसी प्रकार शिक्षा का केन्द्र बना रहा।

**1.4.1.2.5 – अनहिलपाटन** पूर्व मध्य युग में गुजरात के चौलुक्य वंश की राजधानी अनहिलपाटन थी जो शिक्षा के लिये विख्यात थी। हिन्दू धर्म, जैन, जय दर्शन की शिक्षा यहां दी जाती थी। चौलुक्य शासक विद्वान होने के कारण विधा व शिक्षा के उत्कर्ष में सहयोग देते थे। निम्न लेखकों ने अनहिलपाटन के आश्रम में विभिन्न ग्रन्थों की रचना की।

- सोमप्रभाचार्य
- हेमचन्द्र
- रामचन्द्र
- उदयचन्द्र
- जयसिंह
- यशपाल
- वत्सराज
- सौढल
- मेरुतुंग

प्रधान लेखक हैमचन्द्र जिन्होंने व्याकरण छन्द, शब्द, शास्त्र, साहित्य, कोश, इतिहास दर्शन आदि विषयों में अलग-अलग ग्रन्थों की रचना की। संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंशआदि विभिन्न भाषाओं का उत्कर्ष और प्रसार यहां हुआ था।

**1.4.1.2.6 कश्मीर** प्राचीन काल से कश्मीर धर्म शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। यह शैव धर्म, बौद्ध धर्म, व शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। यहां दर्शन साहित्य, न्याय, ज्योतिष, इतिहास आदि के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान हुए जिन्होंने साहित्य और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों की रचना की। कल्हण ने राजनीतिगणी नामक इतिहास लिखकर भारतीय इतिहास की अद्वितीय सेवा की तथा कश्मीर में राजरंगिणी ग्रंथलेखन की परम्परा का सूत्र पात किया।

**1.4.1.2.7 कांची** – दक्षिण भारत में पल्लव वंशी शासकों के नेतृत्व में कांची एक महान शिक्षा केन्द्र बन गया था। समूद्रगुप्त के शासन काल में इसकी काफी प्रतिष्ठा थी। यहां आचार्य वैदिक साहित्य का अध्यापन कार्य करते थे। कांची ने शिक्षा केन्द्र का विकास विश्वविद्यालय के रूप में हुआ। भारत के दक्षिण भाग के अतिरिक्त विभिन्न प्रदेशों के निवासी यहां शिक्षा ग्रहण करने आते थे। कहा जाता है कि वात्सयायन और दिङ्नाग जैसे महान ज्ञाता कांची विश्वविद्यालय में रहकर पढ़े हुए थे। वस्तुतः संस्कृत भाषा व साहित्य का उत्कर्ष कांची में अत्यन्त तीव्र गति से हुआ था।

### विश्लेषण करें

प्राचीन शिक्षा मूल्यों व व्यक्तित्व विकास पर आधारित थी। वर्तमान संदर्भ में शिक्षा रहने व अंकों पर आधारित है। शिक्षा पद्धति में कोई बदलाव किया जाना चाहिये यदि हाँ तो बदलाव के तक प्रस्तुत करें।

अपनी प्रगति की जाँच करें

प्रश्न – पाषाण युग का परिचय देवे।

.....

.....

प्रश्न – सिंधू घाटी की सभ्यता की मुख्य विशेषतायें संक्षिप्त में लिखे।

.....

.....

प्रश्न— तक्षशिला विश्वविद्यालय क्यों प्रसिद्ध था? उल्लेख करें

.....

.....

प्रश्न – रामायण व महाभारत में वर्णित शिक्षा केन्द्रों का संक्षिप्त परिचय दें।

.....

.....

### सारांश

- इतिहास मानव जीवन के समस्त क्रिया लापो का वृत्तान्त प्रस्तुत करता है।
- भारत में आदि मानव का उदय व विकास का प्रारंभिक युग पाषाण काल कहालाता है।
- 1921 में हड़प्पा व मोहन जीदड़ों स्थानों पर उत्खनन से सिंधु घाटी सभ्यता की जानकारी प्राप्त हुई थी।
- नगर निर्माण भवन निर्माण, विशाल स्नानगार लोकतांत्रिक व्यवस्था कृषि प्रधान सभ्यता आदि यहां की मुख्य विशेषताएँ हैं।
- प्राचीन काल में शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त ज्ञानपरक सुव्यवस्थित व सुनियोजित था। जिसमें व्यक्ति के लौकिक व पारलौकिक जीवन के लिये विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी।
- नालन्दा विश्वविद्यालय, वलभी विश्वविद्यालय विक्रमशिला, विश्वविद्यालय श्रावस्ती नगर का शिक्षा केन्द्र आदि बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।
- तक्षशिला विश्वविद्यालय, काशी, कन्नौज, कांची, धारा, अनहिलपाटन, कश्मीर, आदि हिन्दू शिक्षा के केन्द्र थे।

संदर्भ –

- ❖ भटनागर, सुरेश कुमार, संजय “भारत में शिक्षा का विकास” आर लाल बुक डिपो मेरठ (2006)
- ❖ भटनागर, ए.बी., भटनागर, मीनाक्षी, भटनागर, मीनाक्षी, “भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास” आर लाल बुक डिपो मेरठ (2006)।
- ❖ रावत ज्ञानेन्द्र “शिक्षा का स्वरूप” राजा पब्लिकेशन नई दिल्ली (2006)।
- ❖ यादव, केदारनाथ सिंह, यादव रामजी “भारतीय शिक्षा इतिहास एवं समस्यायें”, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली (2006)।
- ❖ **Pruthi, R.K. " Educatio in Ancient India" Sonal Publication New Delhi (2006)**
- ❖ मिश्र, जयशंकर “प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना (2004)
- ❖ वर्मा, भगवान सिंह, सुल्लेरे, एस.के. “प्राचीन भारत का इतिहास “ मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (2002)